इस्लाम धर्म शास्त्र

लेखक : जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
अनुवादक : जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 1

अध्याय : 1

ईश्वर का ज्ञान

(1) तौहीदः– तौहीद का अर्थ एकेशवरवाद है। क्योंकि यदि कई ईश्वर होते तो संसार के प्रबन्ध में झगड़ा होता। एक ईश्वर कुछ कहता दूसरा कुछ, इस प्रकार मतभेद बढ़ जाता और कोई वस्तु उत्पन्न न होती।

(2) अद्लः– अर्थात ईश्वर न्यायी है, अत्याचारी नहीं। क्योंकि अत्याचार करना बुरा है और ईश्वर प्रत्येक बुराइयों से पवित्र है।

ईश्वर का ज्ञान

(1) जिस प्रकार कोई घर अथवा मिट्टी का खिलौना बिना निर्माणकर्ता के निर्मित नहीं होता उसी प्रकार नभ मण्डल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, घन, पर्वत, वृक्ष, मनुष्यों तथा पशुओं का निर्माता भी अवश्य होना चाहिए। जो इन समस्त वस्तुओं का जन्मदाता है वही ईश्वर है।

(2) जिस प्रकार चर्खा चलाया जाता है तब चलता है उसी प्रकार आकाश तथा पृथ्वी का चलाने वाला भी होना चाहिए। वही ईश्वर है।

(3) पथिक के पदचिन्हों को देखकर यह ज्ञात होता है कि कोई पथिक इधर से गया है एंव ऊंट की मेंगनियों को देख कर यह अनुमान किया जाता है कि इधर से ऊंट होकर गया है अतः यह सिद्ध हुआ कि सृष्टि का बनाने वाला भी कोई अवश्य है। वही ईश्वर है।

सिफ़ाते सुबूतिया

अर्थात् जो गुण ईश्वर में पाये जाते हैं वे आठ हैंः–

(1) क़दीम (अनादि एवं अनन्त) :–अर्थात् वह सदैव से है और सदैव रहेगा।

(2) क़ादिर (सर्वशक्तिमान) :–अर्थात् वह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है।

(3) आलिम (सर्वज्ञानी) :–अर्थात् उसको प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है।

(4) मुदरक (सर्वबोधी) :–अर्थात् वह बिना आंख, कान तथा नाक के प्रत्येक वस्तु को देख, सुन और सूंघ सकता है।

(5) हई (सजीवन) :–अर्थात् उसे विनाश नहीं, वह जीवित है और सदा जीवित रहेगा।

(6) मुरीदः–अर्थात् वह प्रत्येक कार्य अपने अधिकार से इच्छानुसार करता है।

(7) मुतकल्लिमः–अर्थात् वह जिस वस्तु में चाहे बात करने की शक्ति उत्पन्न कर सकता है।

(8) सादिक़ः–अर्थात् वह सत्यवादी है।

सिफ़ाते सलबिया

अर्थात् जो बातें ईश्वर में नहीं पायी जातीं वे आठ हैंः–

(1)मुरक्कब नहींः–अर्थात् किसी वस्तु से मिलकर नहीं बना है।

(2) जिस्म नहींः–अर्थात् वह निराकार है।

(3) मकान नहींः–अर्थात् उसका कोई एक निवास स्थान (ठिकाना) नहीं। वह सर्वव्यापी है।

(4) हुलूल नहींः–अर्थात् वह किसी में प्रवेश नहीं करता।

(5) मरई नहींः–अर्थात् वह देखाने में नहीं आता।

(6) महले हवादिस नहींः–अर्थात् वह एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में परिवर्तित नहीं होता।

(7) वह अपना कोई सहयोगी नहीं रखतां

(8) समस्त विशेषताएं ईश्वर के व्यक्ति से प्रथम नहीं वरन् उसके व्यक्तित्व से सम्बन्धित हैं।

अध्याय 2

सृष्टि की रचना

संसार की उत्पत्तिः– ईश्वर को जब संसारोत्पत्ति का विचार हुआ तब ईश्वर ने कह दिया कि ''हो जा'' अतः संसार हो गया।

मनुष्य की उत्पत्तिः–अर्थात् हज़रत आदम का जन्म। आकाश एंव पृथवी की रचना करने के

पश्चात् ईश्वर ने हज़रत इज़राईल (एक दूत) के द्वारा विभिन्न प्रकार की एक मुट्ठी मिट्टी मंगवाई और उसको प्रथम पानी में गुंधवाया फिर उसको खमीर होने के लिए कुछ समय तक छोड़ दिया कि उसमें लस उत्पन्न हो गया तदोपरान्त उसका एक पुतला (मूर्ति) बनाया और उसे सूखने के लिए छोड़ दिया यहां तक कि उसमें ठीकरे की भांति खनखनाहट उत्पन्न हो गईं। फिर उसमें रूह (आत्मा) फुंकी और फ़रिश्तों (देवताओं) को सजदा (दण्डवत, मस्तक झुकाना) करने का आदेश दिया फिर कुछ समय तक स्वर्ग में रखा तत्पश्चात संसार में भेजा और पृथ्वी से उपजने वाली वस्तुओं को उसका आहार बनाया। यह घटना सन् 1382 हि0 तथा सन् 1962 ई0 से लगभग 7598 वर्ष पूर्व की है। इसके पश्चात ईश्वर ने अपने सामर्थ्य प्रभुत्व से हज़रत हव्वा को उत्पन्न किया। फिर हज़रत आदम तथा हज़रत हव्वा का परस्पर विवाह हुआ और उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए। उनके हेतु ईश्वर ने स्वर्ग से दो हूरों (अप्सराओं) को उनसे विवाह के लिए भेजा अतः उनका विवाह हुआ। इसी प्रकार उन दोनों की सन्तान पुत्र तथा पुत्री में परस्पर विवाह होता रहा और इस क्रम के अनुसार जन संख्या में वृद्धि होती रही है।

सृष्टि रचना का उद्देश्य

संसार में बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति कोई कार्य व्यर्थ नहीं करते चाहे उनके उद्देश्य को लोग भली भांति समझें अथवा न समझें इसी प्रकार ईश्वर ने संसार तथा सृष्टि की रचना व्यर्थ नहीं की है। उसके कुछ उद्देश्य हैं। उद्देश्य क्या हैं, ईश्वर के आदेशों का भली भांति सहृदय पालन करना और उसकी इबादत (भक्ति) करना।

नबूवत का वर्णन

गत पृष्ट पर लिखा जा चुका है कि सृष्टि रचना का उद्देश्य ईश्वर की इबादत अर्थात् भक्ति करना और उसके आदेशों का पालन करना है। परन्तु परमात्मा या ईश्वर को कोई देख नहीं सकता और इससे कोई वार्तालाप नहीं कर सकता। अतः इसकी आवश्यकता हुई कि ईश्वर तथा प्राणी जगत के मध्य कोई ऐसा व्यक्ति हो जो ईश्वर की वाणी को सुने और मनुष्यों से उसका व्याख्यान करे तथा ईश्वर के आदेशों को मनुष्यों तथा जीव जन्तुओं तक पंहुचाए। उनको सुमार्ग बताए जिसमें उनका लोक तथा प्रलोक दोनों स्थान पर कल्याण हो और यदि ऐसा न हो तो उनके विनाश का कारण होगा। अतः ईश्वर की ओर से रसूलों (सन्देश पहुंचाने वाले महापुरूष) का आना आवश्यक हो गया कि वे संसार में आकर प्राणियों को उन बातों के करने से रोक दें जो ईश्वर को अप्रिय हैं और उन बातों के करने का आदेश दे जो ईश्वर को प्रिय है। यही समाचार देने वाला व्यक्ति नबी, रसूल अथवा पैग़म्बर कहलाता है।

अध्याय 3

नबियों के गुणों का वर्णन

(1) प्रत्येक रसूल, नबी तथा पैग़म्बर आदि जन्म काल से अन्त समय तक विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े पापों से मुक्त होता है वह निरापराध तथा पवित्र है। भूल से भी उससे कोई पाप नहीं होता।

(2) नबी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने समय के व्यक्तियों से सब बातों में उत्तम हो और उस विद्या में दक्ष हो जिसकी आवश्यकता उसके अनुयायियों को हो।

(3) उस में सभी विशेषताएं (सद्गुणों) विद्वमान हों जैसेः— बुद्धि, कुलीन्ता, वीरता, दया, साहस, गम्भीरता इत्यादि। और छल, कपट, लालच, धन, दान की अभिलाषा कायरता, दुराचारण, अपवित्रता तथा संसार प्रेम से वन्चित (विहीन) हो।

(4) उसे कोई घृणात्मक रोग न हो जैसेः—कोढ़ प्रदर इत्यादि और वह कुलग, मूक, बहरा तथा अपाहिज न हो।

(5) उसके वंश में किसी प्रकार का दोष न हो।

(6) वह अपने में मोजिज़ा (ऐश्वरीय शक्ति से चमत्कार) रखता हो। जैसेः— उंगली के संकेत से चन्द्रमा के दो टुकड़े कर देना, मृत व्यक्तियों को जीवित कर देना, वृक्षों को बात करने की शक्ति प्रदान कर देना। पत्थरों तथा कंकरों से ईश्वर के गुणगान करा लेना इत्यादि।

नबियों अथवा पैग़म्बरों की गणना

संसार में जितने पैग़म्बर (ईश्वर के

सन्देशधारी) आए उनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार बताई जाती है। सभी पैग़म्बरों तथा बारह इमाम (अलैहिस्सलाम) समस्त फरिश्तों (ईश्वर दूतों/देवता) से श्रेष्ठ हैं। जिन नबियों का व्याख्यान कुरआन ने किया है उन पर सम्पूर्ण विश्वास रखना इस्लाम धर्म में अनिवार्य है। सभी नबियों ने इस्लाम धर्म की शिक्षा दी। सभी पैगम्बर नियमों, सिद्धान्तों तथा सदाचरण में एकमृत थे। केवल फ़ुरू–ए–दीन (धर्म के गौड़ सिद्धान्त/आदेश) के उपदेशों (आदेशों) में समयानुसार कुछ परिवर्तन होता रहा।

कुरआन द्वारा वर्णित नबियों के नाम

(1) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम, (2) शीस अ0, (3) इद्रीस अ0, (4) नूह अ0, (5) हूद अ0, (6) सालेह अ0, (7) शुऐब अ0, (8) इब्राहीम अ0, (9) लूत अ0, (10) मूसा अ0, (11) ईसा अ0, (12) इस्माईल अ0, (13) याकूब अ0, (14) इस्हाक़ अ0, (15) दाऊद अ0, (16) सुलैमान अ0, (17) अय्यूब अ0, (18) यूनुस अ0, (19) इल्यास अ0, (20) यहिया अ0, (21) ज़करिया अ0, (22) हारून अ0, (23) जुलकिफ़्ल अ0, (24) यूसुफ अ0, (25) हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सवल्लल्लाह अलैह व आलेही वसल्लम)

सर्वश्रेष्ठ नबी

(1) नूह अ0, (2) इब्राहीम अ0, (3) मूसा अ0, (4) ईसा0 अ0, (5) मुहम्मद मुस्तफा स0 अ0।

इन सब में उत्तम हमारे पैग़म्बर हैं। उनकी नबूवत, शरीयत, (धर्म शास्त्र/धर्म विधि) और स्मृति प्रलय तक रहेगी।

नबियों तथा इमामों की उत्पत्ति

ईश्वर का विचार जब सृष्टि सजाने का हुआ तो सर्व प्रथम अपने मित्र मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 के नूर (प्रकाश) को उत्पन्न किया जिसके कारण समस्त विश्व प्रकाशित हो गया। तत्पश्चात वही नूर हज़रत आदम अ0 के मस्तक पर था फिर नूर प्रत्येक नबियों तथा पैग़म्बरों में स्थानान्तरण होता रहा।

फ़रिश्तों की उत्पत्ति

ईश्वर ने नबियों तथा मनुष्यों के अतिरिक्त कुछ और लोगों को नूरानी (प्रकाशित) तत्व से उन्पन्न किया जो लोक तथा परलोक के कार्यकर्ता है और प्रत्येक समय ईश्वर के ध्यान ज्ञान में व्यस्त रहते हैं। वे जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं। उनमें से चार श्रेष्ट फिरिश्तों के नाम तथा कार्य निम्नलिखित हैः–

(1) जिबरईल :– आप ईश्वर के आदेशों को नबियों तथा पैग़म्बरों तक पंहुचाते हैं।

(2) मीकाईल :– आप ईश्वर की आज्ञा से कुल प्राणियों को जीविका पंहुचाते हैं।

(3) इज़राईल :– आप समस्त जीव धारियों का प्राण हरण करते हैं।

(4) इसराफ़ील :– आप प्रलय के पूर्व सूर (भोपू) फूकेंगे जिसके बिकट नाद से समस्त प्राणी मर जायेंगे। आप केवल इसी कार्य के लिए नियुक्त हैं।

आठ प्रसिद्ध पैग़म्बरों का वर्णन

(1) हज़रत आदम अ0ः– इसके पूर्व आपके जन्म का उल्लेख किया जा चुका है। आप 1962 ई0 से लगभग 7589 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर लाये गये। आप सर्वप्रथम सरनाद्वीप अर्थात श्रीलंका में 'आदम पर्वत' पर उतारे गये। यदि लंका को भारत वर्ष का एक अंग मान लें तो भारत वर्ष ही को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उसकी भूमि पर प्रथम नबी वर्तमान सृष्टि के बाबा आदम पधारे। उनकी पत्नी हज़रत हव्वा को 'जद्दा' (सऊदी अरब) में उतारा। कुछ समय के पश्चात आदम तथा हव्वा में अरफ़ात के मैदान (मक्का) में जिलहिज्जा (बक़रीद) के मास की 9 तिथि को भेंट हुई। इसी के स्मरण में मुसलमान हज के समय 9 बक़रीद को अरफ़ा दिवस मनाते हैं और अरफ़ात के मैदान में उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं। आप की आयु लगभग 930 वर्ष की हुई ।

प्रथम मानव–हत्या

हज़रत आदम अ0 के दो पुत्र 'क़ाबील' तथा 'हाबील' थे। हाबील छोटे, सुशील, सदाचारी तथा ईश्वर भक्त थे इसी कारण हज़रत आदम उनको अपनी नबूवत का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। अतः यह बात बड़े भाई क़ाबील को अप्रिय लगी उसने विचार किया कि यदि हाबील का वध कर डाला जाए तो यह पद मुझे मिल जाएगा। इसी विचार के वंशीभूत होकर क़ाबील ने हाबील का वध कर डाला और भूमि में गाड़ दिया। उस समय संसार के चौथाई मनुष्य मर गये। इसके पश्चात हज़रत आदम अ0 के दूसरे पुत्र हज़रत शीस अ0 उत्पन्न हुए फिर अन्त में इन्हीं को नबूवत का पद मिला।

(2) हज़रत इदरीस अ0ः– आप का जन्म 1962

ई0 से लगभग 6500 वर्ष पूर्व हुआ था। आप हज़रत आदम अ0 की पचासवीं पीढ़ी में हैं। आप हज़रत नूह अ0 के परदादा (पूर्वज) थे। आप पर आकाश से अनेकों पुस्तकें उतरीं। आप ही ने लेखन विद्या, ज्योतिष विद्या, गणित विद्या, आकाश विद्या, शिल्प कला, नाप तौल, तराजू, तथा अस्त्र शस्त्र का निर्माण और सीने पिरोने के कार्यों का आविष्कार किया। आप बड़े ईश्वरभक्त थे। अपनी मृत्यु के पश्चात आप फिर जीवित हुए और फिरिश्तों के साथ नरक तथा स्वर्ग का भ्रमण किया और फिर स्वर्ग में रह गये।

मूर्ति पूजा का विकास

अनुमानतः हज़रत इद्रीस की मृत्यु के पश्चात ही लोग अपने प्रतिष्ठित पूर्वजों की मूर्ति बनाकर उनका स्मरण करने लगे। फिर धीरे धीरे आगामी वंशज के लोग उनको देवता अथवा ईश्वर मान कर उनकी मूर्ति बनाकर पूजने लगे।

(3) हज़रत नूह अ0:— आप का समय सन् 1962 ई0 से लगभग 6000 वर्ष पूर्व का है। आप की आयु कुल 2500 वर्ष की हुई आप लोगों को एकेश्वरवाद और उसकी उपासना को शिक्षा देते थे परन्तु लोग स्वीकर नहीं करते थे और आप को पत्थरों से मारते थे। लगभग 1000 वर्ष की शिक्षा के पश्चात केवल 80 पुरूष ईश्वर के भक्त (आस्तिक) हुए। (1) हज़रत नूह, (2) हाम, (3) साम, (4) याफ़िस, अन्तिम तीन व्यक्ति हज़रत नूह के पुत्र थे। उनकी 8 पत्नियां तथा उनके अनुयायियों में 72 व्यक्ति और ईश्वरभक्त हुए। तब आप ने शाप दिया कि हे परमात्मा इस पृथ्वी पर कोई काफ़िर (ईश्वर को न मानने वाला/नास्तिक) न रहे। परमात्मा का अदेश हुआ कि एक नवका का निर्माण करो। अतः आपने एक नवका बनाई।

नूह की नवका:—इस नवका की लम्बाई 1200 गज, चौड़ाई 800 गज, ऊँचाई 80 गज थी। उस में 80 पुरूष तथा स्त्रियां एंव कुल पशु पक्षियों का एक जोड़ा सवार हुआ।

तूफान—ए—नूह :— नवका मस्जिद—ए—कूफा के समीप बनाई गई और उसी स्थान से पहले पानी उबलना आरम्भ हुआ। फिर समस्त स्रोत उबलने लगे। आकाश से घनघोर वर्षा होने लगी प्रत्येक स्थान पर जल ही जल दृष्टिगोचर होने लगा। समस्त सृष्टि नष्ट हो गई फिर उसके पश्चात जल की बाढ़ घटी, लोगों ने भूमि पर पदार्पण किया और फिर धीरे—धीरे सृष्टि की पुनः रचना हुई। इसी कारण आप को आदम—ए—सानी (द्वितीय आदम) भी कहते हैं।

(4) हज़रत इब्राहीम अ0:— आपका जन्म 1962 ई0 से लगभग 4300 वर्ष पूर्व 'बाबिल' (हिल्ला, इराक़) में 'नमरूद' नामक राजा के काल में हुआ था। नमरूद ने स्वप्न देखा कि उसके नगर के किनारे एक ऐसा नक्षत्र उदय हुआ जिसकी ज्योति के सम्मुख चन्द्रमा तथा सूर्य का प्रकाश मान्द पड़ गया। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि तेरे राज्य में एक ऐसे बालक का जन्म होगा जो तेरे राज्य का सर्वनाश कर देगा। यह सुनकर नमरूद ने आदेश दिया कि स्त्री—पुरूष पृथक मृथक रहें और जो बालक भी उत्पन्न हो उसको मार डाला जाये। परन्तु जिसे ईश्वर रखे उसे कौन चखे। परमात्मा की इच्छा होकर रही। हज़रत इब्राहीम की माता गर्भवती हुई और प्रजनन के समय पर्वत की गुफा में गई जहां इब्राहीम अ0 का जन्म हुआ। आप गुफा के द्वार पर एक पत्थर रख चली आईं दूसरे दिन जब जाकर देखा तो हज़रत इब्राहीम मुख में अपनी उंगली डाले चूस रहे हैं। एक से दूध दूसरी से मधु की धारा बह रही है। वे एक श्वांस में इतना बढ़ते थे जितना कि एक साधरण बालक एक मास मे बढता है। जब 'नमरूद' का भय कुछ कम हुआ तो अप नगर में लाए गये। (इसी कथा से मिलती हुई कथा भगवान कृष्ण तथा अत्याचारी राजा कंस की भी है)

हज़रत इब्राहीम का अग्नि प्रवेश

नमरूद अपने को ईश्वर कहता था और हज़रत इब्राहीम एकेश्वरवाद का प्रचार करते हुए ईश—भक्ति का सन्देश देते थे अतः नमरूद आपका कट्टर शत्रु हो गया। उसने आदेश दिया कि लकड़ियां एकत्र करके अग्नि प्रज्वलित की जाए और उसमें हज़रत इब्राहीम को जला दिा जाए। लकड़ियां एकत्र की गईं उस पर तेल छिड़का गया फिर उसे आग लगा दी गई। जब अग्नि ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया तो उठती हुई ज्वाला में हज़रत इब्राहीम को 'गोफन' द्वारा फेंका गया। परन्तु ईश्वर की करनी ऐसी हुई कि अग्नि ठण्डी हो गई और हज़रत इब्राहीम जीवित रहे। (यह कथा हिरण्यकश्य तथा प्रहलाद की कथा से मिलती है)

हज़रत इस्माईल का बलिदान

एक बार हज़रत इब्राहीम ने स्वप्न देखा कि मैं अपने पुत्र इस्माईल को ज़िब्ह (बलि चढ़ाना) कर रहा हूं। इस स्वप्न का वर्णन आपने अपने पुत्र इस्माईल से किया। उन्होंने उत्तर दिया कि ईश्वर की इच्छानुसार आप बलि अवश्य चढ़ाइये। फिर हज़रत इब्राहीम ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल का हाथ पैर बान्ध कर लिटा दिया और अपने नेत्रों पर पट्टी बांध ली और बलि चढ़ाने के लिए छुरी गर्दन पर फेरने लगे। इसी बीच ईश्वर ने इस्माईल की बलि स्वीकर करते हुए एक दुम्बा (भेड़ा) भेज दिया। और इस प्रकार हज़रत इस्माईल बच गए और दुम्बा बलि चढ़ गया। इसी स्मृति में संसार के मुसलमान 10 बक़रीद को पशुओं (जिनपर कुरबानी जायज़ है) की बलि चढाते हैं अथवा कुरबानी करते हैं।

ख़ान–ए–काबा

जब हज़रत आदम अ0 इस धरती पर पधारे उसी समय ईश्वर ने एक याकूत का कुब्बा (घर) पृथ्वी पर उतारा फिर जब नूह का तूफ़ान आया तो वह आकाश पर उठा लिया गया। फिर हज़रत इब्राहीम और उनके पुत्र हज़रत इस्माईल अ0 ने मिलकर ईश्वर की आज्ञा से पूर्व स्थान पर काबा गृह का निर्माण किया। जिसके चारों ओर हज के समय हाजी गण 7 बार चक्कर लगाते हैं। इस क्रिया को 'तवाफ़–ए–काबा' कहते हैं।

ज़मज़म का जल

जब हज़रत इस्माईल का जन्म हुआ था उस समय उनकी माता जल की खोज में 'सफ़ा' पर्वत से 'मरवा' पर्वत तक सात बार दौड़ती हुई आयीं और गयीं परन्तु जल उपलब्ध न हो सका जब हज़रत इस्माईल प्यास के कारण एड़ियां रगड़ने लगे तो उसके घर्षण से जलस्रोत प्रवाहित होने लगा। वही जल ज़मज़म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी की स्मृति में मुसलमान हाजी 'सफ़ा' और 'मरवा' पर्वत श्रेणी के मध्य 7 बार दौड़कर आते और जाते हैं। इस क्रिया को 'सई' कहते हैं। जब उस स्थान पर जल उपलब्ध हो गया तो सर्व प्रथम 'जरहम' गौत्र के व्यक्ति मक्के में आकर बस गए तदोपरान्त अन्य व्यक्ति आते और बसते रहे।

(5) हज़रत मूसा अ0 :– आप का जन्म सन् 1962 ई0 से लगभग 3800 वर्ष पूर्व हुआ था। वह काल 'फिरऔन' नामक पापी राजा का राज्य काल था। फिरऔन के राज्य ज्योतिषि ने यह भविष्यवाणी की थी कि 'बनी इस्राईल' में एक बालक का जन्म होगा जो तेरे राज्य का विनाश कर देगा। उसने क्रोधित होकर यह आदेश दिया कि बनी इस्राईल के गौत्र में जितने बालक उत्पन्न हों मार डालें जायें। अनेकों निरपराध बालक बलि चढ़ गए परन्तु ईश्वर की करनी कुछ ऐसी हुई कि हज़रत मूसा अ0 का जन्म हआ। उनकी माता ने हत्या के भय से उनको एक लकड़ी के सन्दूक में बन्द करके नदी की गोद में अर्पित कर दिया। वह सन्दूक फिरऔन की पत्नी के हाथ लगा। वह निःसन्तान थी अतः वह उस बालक को राज महल में ले आई इस प्रकार हज़रत मूसा का पालन पोषण शत्रु के घर ही में होता रहा।

फ़िरऔन का विनाश

हज़रत मूसा भी एकेश्वरवाद और ईश्वर की भक्ति का उपदेश देते थे। यह बात फ़िरऔन को अप्रिय लगी क्योंकि वह स्वयं अपने को ईश्वर कहता था अतः उसने हजरत मूसा अ0 तथा उनके थोड़े से अनुयायियों पर आक्रमण कर दिय। ये व्यक्ति भयभीत होकर नील नदी की ओर भागे। जब हज़रत मूसा अ0 ने यह देखा तो उन्होंने अपना चमत्कारी डण्डा नील नदी पर मारा। नील नदी का जल दो भागों में विभाजित हुआ और बीच में मार्ग बन गया तथा वे लोग और हज़रत मूसा उस पार उतर गये। फिरऔन तथा उसकी सेना ने भी वही मार्ग पकड़ा परन्तु जब वे बीच धारा में पहुंचे तो वह मार्ग अदृश्य हो गया और वे सबके सब जल में डूब कर सदा के लिए नष्ट हो गए। यह कथा भी भारत में कृष्ण भगवान तथा कंस की कथा से मिलती जुलती है।

गऊ पूजा का विकास

हजरत मूसा अ0 अपने भाई हारून को अपना उत्तराधिकारी बनाकर 'तौरेत' (ईश्वर की ओर से आकाश से उतारे गये धार्मिक ग्रन्थों में से एक) लेने के लिए एक मास के लिए 'तूर' नामक पर्वत पर गये। परन्तु उनको वहां चालीस दिन लग गये। इसी बीच 'सामरी' नामक प्रसिद्ध जादूगर के बहकावे में आकर हज़रत मूसा अ0 के अनुयायी मिट्टी का बछड़ा बनाकर पूजने लगे हज़रत हारून ने बहुत समझाया परन्तु वे

न माने जब हज़रत मूसा अ0 आए तो अत्यन्त क्रोधित हुएं।

(6) हज़रत दाऊद अ0:—आपका जन्म सन् 1962 ई0 से लगभग 3265 वर्ष पूर्व हुआ था। आप उस समय के राजा और पैग़म्बर भी थे। आप पर आकाश से 'ज़ुबूर' नामक पुस्तक (ग्रन्थ) उतारी गई थी। आपको ईश्वर ने ऐसी शक्ति प्रदान की थी कि लोहा मोम की भांति नर्म हो जाता था। वे प्रतिदिन लोहे की एक कवच बनाते थे और उसी को बेच कर अपना जीवन निर्वाह करते थे। राज्यकोष से अपने ऊपर कुछ व्यय नहीं करते थे। आप जब जुबूर पढ़ने मैदान में जाते तो आपके पीछे समस्त यहूदी जिन्नात तथा जंगली पशु पक्षियों की पंक्ति सिर पर छाया किये रहती थी। आप जब ज़ुबूर पढ़ते थे तो सब मुर्छित हो जाते थे और पर्वतों में वाणी उत्पन्न होती थी।

(7) हज़रत सुलैमान अ0:—आप का जन्म सन् 1962 ई0 से अनुमानतः 3207 वर्ष पूर्व हुआ था। आप समय के राजा भी थे और पैग़म्बर भी। आपने कुल 700 वर्ष तथा 6 मास राज्य किया। मनुष्य, जिन्नात, पशु पक्षी तथा वृक्ष, वायु, जल, अग्नि तथा संसार की प्रत्येक वस्तु आपके शासन अधिकार (सत्ता) में थी। आपने लकड़ियों पर शीशों के एक हज़ार महल बनवाये थे। आपकी सेना लगभग 320 किलोमीटर की लम्बाई तथा 320 किलोमीटर चौड़ाई में फैल जाती थी। आपने एक सिन्हासन बनवाया था जो बहुत लम्बा चौड़ा था। उसके बीच में आप का मेज़ होता था और उसके चहु ओर 600 कुर्सियां सोने चांदी की रखी जाती थी। उन पर मुख्य मुख्य राज्य सहयोगी बैठते थे शेष व्यक्ति पीछे खड़े होते थे। उनके पीछे जिन्नात होते थे और सब के ऊपर पशु पक्षी पक्ति बनाकर छाया किए रहते थे। इन सब को वायु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती थी। ऐसे प्रतापी तथा तेजस्वी राजा का देहान्त इस प्रकार हुआ कि एक दिन आपने यह आज्ञा दी कि मेरी सेना तथा समस्त कर्मचारी मैदान में राजमहल के सामने उपस्थित हो जायें। परन्तु मेरे पास कोई भी न आए। मैं अपनी प्रजा का निरीक्षण करूंगा। आपकी आज्ञा का पालन हुआ। सब खड़े हो गए। इतने में आप राजमहल के ऊपर चढ़ कर डण्डे के सहारे खड़े हो गए। इतने में यम देवता पहुंचे सुलैमान अ0 ने कहा कि आज मैंने यह घोषण कर दी थी कि मेरे पास कोई न आए फिर आप कैसे आए? यम देवता ने उत्तर दिया कि मैं ईश्वर की आज्ञा से आपका प्राण हरण करने आया हूँ। और हजरत सुलैमान को बैठने का भी अवसर न देकर खड़े—खड़े ही उनका प्राण अपहरण कर लिया। आप का मृतक शरीर अधिक समय तक इसी प्रकार डण्डे के सहारे पर खड़ा रहा और प्रजा भी उनको खड़ा देख कर खड़ी आज्ञा का पालन करती रही। जब डण्डे में दीमक लगी और डण्डा टूट कर गिरा तो उसी के साथ उनका शरीर भी गिरा। यह देख कर प्रजा हटी कि अब उनके राजा का देहान्त हो चुका है। ईश्वर ने जैसा राज्य हज़रत सुलैमान को प्रदान किया था वैसा उसके पूर्व न किसी को प्रदान हुआ था और न अब किसी को प्रदान होगा।

(8) हज़रत ईसा अ0:—आपका जन्म 'बैत—उल—मुक़द्दस' (फ़िलिस्तीन) में हुआ था। आप ही के जन्म दिवस से ईसवी सन् का प्रारम्भ हुआ इसप्रकार आपके जन्म को 1968 वर्ष हो गये। ईसाई धर्म के अनुयायी आपको अन्तिम पैग़म्बर मानते हैं।

जन्म

आप कुमारी मरियम के गर्भ से ईश्वर की माया से पिता हीन उत्पन्न हुए थे। कुछ लोगों को यह शंका होती है कि बिना पिता के पुत्र कैसे उत्पन्न हो सकता है? इसका उत्तर यह है कि जब ईश्वर अपनी माया से हज़रत 'आदम' तथा 'हव्वा' को बिना माता पिता के उत्पन्न कर सकता है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बिना केवल पिता के हज़रत ईसा अ0 कैसे उत्पन्न हो गए।

आकाश गमन

यहूदी आपको कष्ट देते थे। एक दिन उन्होंने आप को पकड़ कर एक घर में बन्द कर दिया कि प्रातः काल आपको फांसी दे दी जायेगी। ईश्वर की कृपा से जिबरईल दूत आपको उस काल कोठरी के एक छिद्र के द्वारा निकाल कर आकाश पर ले गये। प्रातः काल जब सब यहूदी एकत्र हुए और आपको निकालने के लिए उनका नेता यहूदा घर के भीतर गया तो ईश्वर ने उसे ईसा अ0 की आकृति (समरूप) में परिवर्तित कर दिया। ईसा को न पाकर जब वह बाहर आया तो सब ने उसी को ईसा समझा और पकड़ कर 'सलीब' (Cross) पर लटका कर फांसी दे

दी और ऊपर से सौ कोड़े भी मारे। इसके पश्चात ईश्वर ने फिर उसको अपनी पूर्व की आकृति में परिवर्तित कर दिया।

हज़रत ईसा अ0 हज़रत 'महदी' अ0 के ज़हूर (प्रकटन) के पश्चात आकाश से पृथ्वी पर पधारेंगे और उनके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। समस्त ईसाई मुसलमान हो जायेंगे। 40 वर्ष जीवित रहकर आपकी मृत्यु होगी। आप ही के ऊपर इंजील अथवा बाइबिल नामक पुस्तक आकाश से उतरी थी जो ईसाइयों का धार्मिक ग्रन्थ है।

यहूदी : ये हज़रत मूसा अ0 के अनुयायी हैं और उनको अपना पैग़म्बर मानते हैं।

शैतान : यह एक आकाश दूत (फरिश्ता) था जो आकाश पर फ़रिश्तों के झुण्ड में रहकर ईश्वर की उपासना किया करता था। उसकी उत्पत्ति अग्नि धातु से हुई थी। जब हज़रत आदम का जन्म हुआ तो ईश्वर ने सब फ़रिश्तों से उनके आगे अपना मस्तक झुकाने (दण्डवत) के लिए कहा सबने स्वीकार कर लिया परन्तु शैतान ने यह कह कर कि आदम का जन्म तो मिट्टी से हुआ और मेरा अग्नि से अतः यह मुझसे श्रेष्ठ नहीं हो सकता, अपना मस्तक झुकाने से इनकार कर दिया। इसी कारण वह स्वर्ग से निकाल दिया गया। परन्तु जाते समय इतनी आज्ञा ले कर गया कि मैं संसार वासियों को बहका कर पथ भ्रष्ट करता रहूंगा। ईश्वर ने यह कहकर कि मेरे मुख्य बन्दे (दास) जो होंगे वे कभी तेरे बहकावे में न आयेंगे उसको आज्ञा दे दी।

(9) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0:– आपका जन्म 17 रबी–उल–अव्वल तदानुसार सन् 571 ई0 में मक्के की पवित्र भूमि पर हुआ था। आपके पिता हज़रत अब्दुल्लाह आपके जन्म के पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये थे। आपका पालन पोषण आपके दादा हज़रत अबदुल मुत्तलिब के द्वारा हुआ। जब आपके दादा का स्वर्गवास सन् 579 ई0 में हो गया तो आपकी देख–रेख आपके चाचा हज़रत अबूतालिब ने की। सन् 610 ई0 में चालीस वर्ष की आयु में आपने इस्लाम धर्म का प्रचार नवीन रूप से खुल्लम खुल्ला करना आरम्भ किया जिसके लिए आप भेजे गये थे। जब आपने इस्लाम धर्म को स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया तो पुरूषों में सर्व प्रथम हज़रत अली अ0 (हज़रत अबूतालिब के पुत्र) ने इसे स्वीकार किया। तथा स्त्रियों में सर्वप्रथम मुहम्मद साहब की पत्नी हज़रत 'खदीजा' ने इस्लाम धर्म स्वीकर किया। हज़रत अली अ0 की आयु उस समय केवल 10 या 11 वर्ष की थी। सन् 620 ई0 में आप के संरक्षक तथा चाचा का भी देहान्त हो गया। इस काल में अत्यन्त लघु संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया।

संवत हिजरी : (सन् 622 ई0) जब आपके चाचा हज़रत अबू तालिब का स्वर्गवास हो गया तब मक्का के कुफ्फार (नास्तिक गण) आप को तथा अपके अनुयायियों को अधिक कष्ट देने लगे। तब पैग़म्बर साहब ने जाफ़र–ए–तय्यार अ0 को कुछ व्यक्तियों के साथ हबश देश में भेज दिया तथा कुछ व्यक्तियों को मदीना भेज दिय। एक रात कुफ्फार ने पैग़म्बर साहब की हत्या करने की चेष्टा में तलवार लेकर आपके मकान का घेराव किया। ईश्वर ने अपनी लीला से आप का प्राण बचा लिया और आपको रात्रि के समय मक्का से मदीना जाने की आज्ञा दी। आप मदीने चले गये और अपने बिस्तर पर हज़रत अली अ0 को सुला दिया तदोपरान्त आप मदीने को प्रस्थान कर गए इसी प्रस्थान को हिजरत कहते हैं अतः उसी समय से संवत् हिजरी का प्रारम्भ हुआ।

मदीने में निवास : पैग़म्बर साहब मदीने में सन् 622 से 632 ई0 अर्थात् सन् 1 हिजरी से सन् 10 हिजरी तक रहे। परन्तु मक्का निवासी कुफ्फार ने मुसलमानों को चैन से बैठने न दिया और उन्हें विभिन्न प्रकार का कष्ट देना आरम्भ किया। सेना लेकर कई बार आक्रमण भी किया। अन्त में विवश होकर मुहम्मद साहब ने सुरक्षा के लिए अनेकों संग्राम/जिहाद (धार्मिक युद्ध) भी किये। 28 सफर सन् 11 हिजरी तदानुसार सन् 633 ई0 में 63 वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हुआ।

पैग़म्बर साहब के मोजिज़े (चमत्कार):–ईश्वर की ओर से अरबी भाषा में आपके ऊपर 'कुरान' का उतरना है जो ईश्वर के आदेश, उपदेश, भूत तथा वर्तमान काल की घटित घटनाओं एवम् भविष्य काल की भविष्यवाणी तथा अन्तरगत कथाओं का संग्रह है जो हज़रत जिबरईल फ़रिश्ते द्वारा थोड़ा थोड़ा कर के उतारा गया था। यह ग्रन्थ क़यामत तक शेष रहेगा। यह इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ धर्म ग्रन्थ है इसके समस्त

शब्द तथा वाक्य ईश्वर के हैं।

कुरआन के गुणः— (1) निरन्तर अध्ययन करने पर भी मन विचलित नहीं होता (ऊबता नहीं)। (2) कुरान जैसे वाक्य उसके विरोधी आज तक न ला सके। (3) उसके वाक्य तथा 'सूरे' (अवतरण) प्रभावशाली, दुख हरण एंव लाभदायक है। (4) जहां से चाहे अध्ययन करें अर्थ में कोई त्रुटि नहीं पड़ती और मतभेद नहीं होता।

शारीरिक मोजिज़े (चमत्कार) : (1) आपका मस्तक नूर (प्रकाश) से दमकता रहता था। (2) शरीर में सुगन्ध थी। (3) धूप तथा प्रकाश में आपके शरीर का प्रतिबिम्ब धरती पर नहीं पड़ता था। (4) साथ चलने में आप सभी व्यक्तियों से सदा ऊंचे प्रतीत होते थे। (5) कोई पक्षी आपके सिर के ऊपर से होकर नहीं उड़ता था। (6) आप जिस प्रकार अपने सामने की वस्तुओं को देखते थे उसी प्रकार पीठ के पीछे की वस्तुओं को भी देखते थे। (7) जिस स्थान पर थूक देते थे पानी से भर जाता था। (8) विभिन्न प्रकार की समस्त भाषाओं के ज्ञानी थे और प्रत्येक भाषा में वार्तालाप करते थे। (9) अपनी अंगुली के संकेत से चन्द्रमा को दो भागों में विभाजित कर दिया था। (10) ठीकरे आपके हाथ में तस्बीह पढ़ते थे जिसका स्वर लोग सुनते थे। (11) जिस सवारी के पशु पर आप सवार होते थे वह आपका वशीभूत एंव आज्ञाकारी हो जाता था। (12) नर्म भूमि पर आपके पदचिन्ह नहीं बनते थे परन्तु कठोर भूमि तथा पत्थरों पर आप के पदचिन्ह बन जाते थे। (13) शारीरिक बल एंव शक्ति में आपके मुक़ाबले का कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। आपके जन्म के समय आपकी नाड़ कटी हुई थी तथा खतना (मुसलमानी) हुआ उत्पन्न हुए थे। (14) आपको कभी स्वप्नदोष नहीं हुआ। इत्यादि।

जन्म काल के मोजिज़े (चमत्कार) : (1) आपके जन्म के समय ईरानी शासक 'किसरा' द्वारा बनाया गया 'ऐवान—ए—किसरा' जिसका निर्माण अत्यन्त सुदृढ़ हुआ था और मदाईन (बग़दाद) की पूर्व दिशा में स्थापित है कंपित होकर थरथराने लगा और उसके चौदह कंगूरे (बुर्जी) गिर पड़े। बीच से उसकी दीवार फट गयी और पृथवी तक उसमें दरार पड़ गयी। वह ऐवान आज तक उसी प्रकार शेष है। जिसका मन चाहे जाकर देख सकता है। (2) एक विशाल भवन जो दजला नदी के किनारे निर्मित था, नष्ट हो गया वहां दजला नदी का पानी बहने लगा। (3) एक छोटी नहर जहां ईरानी शासक पूजा किया करता था सूख गई। अब उस स्थान पर नमक की खान है। (4) फारस (ईरान) के पार्सियों का अग्नि कुण्ड जो एक हज़ार वर्ष से जल रहा था उस रात्रि को स्वयं बुझ गया। (5) वर्षो की सूखी हुई एक नहर में जल बहने लगा इत्यादि।

अन्य मोजिज़े (चमत्कार):— (1) जन्म के समय आकाश से अनेकों नक्षत्रों का गिरना। (2) आपके परिवार वालों के लिए आकाश से भोजन का उतरना (3) आप जिस वृक्ष को बुलाते थे वह चला आता था। (4) आपके संकेत से मूर्तियां मुंह के बल गिर पड़ती थी। (5) आपको पत्थर तथा वृक्ष प्रणाम करते थे। (6) सिंह, मुर्ग, भेड़िये तथा बकरी इत्यादि आपसे वार्तालाप करते थे। (7) विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु आपकी रिसालत (पैग़म्बरी) होने के साक्षी थे। अर्थात् उन्होंने गवाही दी थी। (8) आपकी प्रार्थना से मृतक जीवित हो जाते थे, नेत्र रहित व्यक्तियों के नेत्रों में प्रकाश आ जाता था। रोगी स्वस्थ हो जाते थे। (9) आप शत्रुओं पर विजयी होते थे और आपकी सहायता के लिए आकाश से फ़रिश्ते उतरते थे इत्यादि। (10) कतिपय मनुष्यों की आवश्यकताओं को कहने के पूर्व ही पूर्ण कर देते थे। (11) मुनाफिक (कपटी व्यक्ति) जो कुछ अपने घरों में करते थे या उनके हृदय में जो भावनाएं होती थीं उनको बता देते थे। (12) अनेकों भविष्यवाणी की जो समय पर सत्य सिद्ध हुईं। इत्यादि।

(13) शारीरिक मेराज (आकाश गमन):— आपको इसी शरीर के साथ ईश्वर मक्का से 'मस्जिद—ए—अक़सा' तक (जो फिलिस्तीन में है) फिर वहां से "सिदरत—उल—मुन्तहा" (अन्तिम बेरी का पेड़) तक फिर वहां से आकाश तक ले गया। वहां ईश्वर ने आपकी अपनी गुप्त और रहस्य मयी बातें बताईं। आपने 'बैत—ए—मामूर' तथा 'अर्श' के नीचे इबादत (ईश्वरोपासना) की। स्वर्ग में गये वहां पैग़म्बरों तथा नबी की रूह (आत्मा) से भेंट की और फिर कुछ ही क्षण बाद उसी स्थान पर पंहुचा दिए गए।

(जारी......................................)

✦✦✦